Sahaja Yoga Central Commitee of India
(Formed as per instructions given on July 20, 2008 by Mataji Shree Nirmala Devi, after Guru Puja)

Her Holiness Mataji Shree Nirmala Devi
(Founder of Sahaja Yoga)

communications@syccindia.org

सेंट्रल कमेटी ऑफ इंडिया (सीसीआई) द्वारा सूचित, जून/2020/01

<u>*विषय*-दिनांक 12 मार्च 2020 को ग्लोबल सेंट्रल कमेटी (सीसीजी) द्वारा "श्री माताजी के सांसारिक जीवन के अंतिम वर्षों पर चिंतन एवं स्पष्टीकरण"</u>

प्रिय सहजी भाइयों एवं बहनों,

दिनांक 12 मार्च 2020 को सीसीजी द्वारा श्री माताजी के सांसारिक जीवन के अंतिम वर्षों का मूल्यांकन किया गया है। विनम्रतापूर्वक,हम इसे स्वीकार नहीं करते, क्योंकि, उन्होंने श्री माताजी के सांसारिक जीवन के अंतिम वर्षों में उनके स्वास्थ्य एवं उपचार के संबंध में सार्वजनिक हुए नए तथ्यों पर कोई ध्यान नहीं दिया। सीसीजी ने अपने संप्रेषण में बिंदुवार कहा है-

1. "...इस कठिन समय के कुछ पहलुओं पर सामूहिक दृष्टिकोण एवं कुछ अधिक संदिग्ध एवं अनिश्चित अन्य विषय काफी भ्रम,निराशा एवं क्षोभ के कारण हैं।

2 . ... हमें न्याय एवं न्यायिक जांच पड़ताल के लालच को जीतना होगा।

3 . ... उनके अवतरण का एक-एक क्षण उनके जन्म से बहुत पहले ही निर्धारित एवं नियोजित था, फलस्वरूप,उनका यह अवतरण पूर्णत: सुसज्जित एवं संपन्न था।

4 . श्री माताजी की अस्वस्थता की इस अवधि को हम कभी भी समझ नहीं पाएंगे,क्योंकि, उनका इस प्रकार के घटनाक्रम को अनुमति देने का उद्देश्य क्या था,यह हमारी समझ के परे है। कुछ भी उनकी अनुमति के बिना नहीं होता। घास का एक तिनका,या ब्रह्मांड का एक परमाणु भी उनकी आज्ञा के बिना नहीं हिलता। अपने जीवन के उस काल के द्वारा वे हमें क्या सबक या सीख देना चाहती थीं, यह हमारे लिए आत्मचिंतन का विषय है।

5 . ... श्री माताजी की सेवा करने वाले अधिकांश सहजयोगी, जो उनके साथ उनके उपचार संबंधी विचार विमर्श करते थे, वे सभी उत्कृष्ट एवं विशिष्ट थे। हमारी ओर से वे अत्यधिक सम्मान एवं आभार के पात्र हैं। यदि किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार या दिव्य शिष्टाचार के विरुद्ध भागीदारी हुई हो, तो संबंधित सहयोगी ही जाने और अब उन्हें उन स्मृतियों के साथ जीना होगा।

6 . श्री माताजी के परिवार में जो भी घटित हुआ,इसका सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है। हम श्री माताजी के मानवीय जीवन के इस अध्याय को सार्वजनिक करने के लिए ना तो अधिकृत हैं और न ही हमारी कोई मंशा है, बल्कि इसके स्थान पर हम निजता एवं उपचार संबंधी गोपनीयता की सीमाओं को प्रतिष्ठा एवं कुलीनता के साथ स्वीकार करते हैं और उसका सम्मान करते हैं। हमारे लिए यही उचित है।"

Her Holiness Mataji Shree Nirmala Devi
(Founder of Sahaja Yoga)

communications@syccindia.org

सीसीआई यह मानती है कि यह संप्रेषण सत्य एवं वास्तविकता से बचने का एक तरीका है और सभी गलत कार्यों को श्री माता जी की माया की आड़ में सही सिद्ध करने का प्रयास है। हम सीसीजी से निम्न प्रश्न पूछते हैं-

क. क्या सीसीजी ने सत्य को जानने का प्रयास किया? श्री माताजी ने सदैव अपने श्री प्रवचनों का प्रारंभ "सत्य को जानने वाले सभी साधकों को मेरा प्रणाम"कह कर किया करती थीं। उनका यह कथन हम सभी को सत्यवादी बनने को बाध्य करता है और यदि हम उनके बच्चे बनना चाहते हैं,तो हमें कभी भी सत्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

ख. यह कैसे संभव है,कि सीसीजी को श्री माताजी के प्रति गलत व्यवहार को लेकर कभी कोई संदेह ही नहीं हुआ,जबकि उन्हे रिसपैरीडॉन नामक दवा दी जाती थी,जो कि भारत के दो प्रतिष्ठित डॉक्टरों के मतानुसार उनके लिए पूरी तरह प्रतिकूल थी (जिसका जिक्र सर सी. पी. के 2005 के पत्र में स्पष्टत: किया गया था)। ऐसा ही वर्णन श्री माताजी का उपचार कर रही नर्सों द्वारा भी दिया गया है, साथ ही श्री माताजी को उनकी स्पष्ट इच्छा के विरुद्ध पूजाओं में ले जाया जाता था, यह भी तथ्य है।

ग. क्या यह न्याय संगत है,कि सीसीजी बिना किसी तहकीकात के श्री माताजी के प्रति किसी भी व्यक्ति द्वारा किए जा रहे अनुचित व्यवहार की अनदेखी करे (चाहे वे सहजयोगी हों या उनके परिवार के सदस्य)?

घ. सीसीजी का गठन श्री माताजी के प्रत्यक्ष निर्देशों के तहत 20 जुलाई 2008 में कबैला में आयोजित गुरु पूजा प्रवचन के बाद किया गया था। क्या सीसीजी से यह अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए,कि वे श्री माताजी और केवल श्री माताजी के साथ खड़े रहें और उनके विरुद्ध अनुचित व्यवहार की संभावनाओं की तलाश करें?

ड. यदि भविष्य में,ये संभावनाएं सही प्रमाणित होती हैं,तो इतिहास सीसीजी का कैसा मूल्यांकन करेगा?

सीसीआई का यह दृढ़ विश्वास है,कि श्री माताजी के सांसारिक जीवन से संबंधित सत्य सामूहिकता के समक्ष लाया जाना चाहिए। यह हमारी अहं जिम्मेदारी है,कि इस सत्य को सभी सहजयोगियों के समक्ष लाया जाए और गोपनीयता के इस पर्दे को हटाया जाए। यदि कुछ भी गलत हुआ है, तो गलत करने वालों को बेपर्दा किया जाए,जिससे सामूहिकता में व्याप्त संवेग जैसे क्रोध, दुख, भ्रम, अनिश्चितता (जैसा कि सीसीजी ने अपने पत्र में कहा है) को स्थाई रूप से विराम दिया जाए। जब तक यह नहीं होता है, यह बकवास (निरर्थक बातें) बनी रहेगी, जो सहजयोगियों के आध्यात्मिक उत्थान में सहायक नहीं होगी।

Her Holiness Mataji Shree Nirmala Devi
(Founder of Sahaja Yoga)

communications@syccindia.org

तथ्यों और सत्य को खोजकर हम श्री माताजी के प्रति गलत कार्य करने वालों को और जिन्होंने सामूहिकता के समक्ष झूठे तथ्य रखे,उन्हे उजागर कर सकेंगे। सहजयोग अंततः विजयी होगा।

श्री माताजी के प्रति हमारा यह परम कर्तव्य है।जैसा कि वे कहती हैं,

"आपको मेरे प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना होगा, न की सहजयोग के प्रति। सहजयोग तो मेरे आयामों में से मात्र एक है। सब कुछ छोड़ कर तुम्हें समर्पित होना है। पूर्ण समर्पण, अन्यथा आपका उत्थान नहीं हो पाएगा।"

Complete dedication the only way /dedication through meditation
Cheltenham (England),31 July1982

सेंट्रल कमेटी ऑफ इंडिया (सीसीआई) के समस्त सदस्य
जून 15, 2020